ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VII

Subject- Hindi Second Language

Topic-

By- नीलम सौंखला

©ISWK

भोर और बरखा

कवयित्री – मीराबाई

मीराबाई (1498-1573)

मीराबाई,सगुण भक्ति धारा की प्रमुख अध्यात्मिक कवियत्री थीं। इन्होंने कृष्ण भक्ति में डूबकर कई कविताओं, पदों एवं छंदों की रचना की। मीराबाई जी की रचनाओं में उनका श्री कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम, श्रद्धा एवं आत्मसमर्पण का भाव साफ झलकता है।

मीराबाई ने अपनी रचनाएँ राजस्थानी, ब्रज और गुजराती भाषा में की हैं ।

मीराबाई द्वारा लिखी गई कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ इस प्रकार हैं –
गीत गोविंद टीका,राग सोरठ के पद,राग गोविन्द और राग विहाग।

इसके अलावा मीराबाई के गीतों का संकलन "मीराबाई की पदावली" नामक ग्रंथ में किया गया है।।

कविता के बारे में

* पहले पद में मीराबाई ने ब्रज की भोर और यशोदा माँ द्वारा श्रीकृष्ण को जगाने के प्रयास का वर्णन किया है।

- दूसरे पद में मीरा ने सावन के महीने का मनमोहक चित्रण और कृष्ण के प्रति अपनी श्रद्धा और प्रेम का वर्णन किया है।

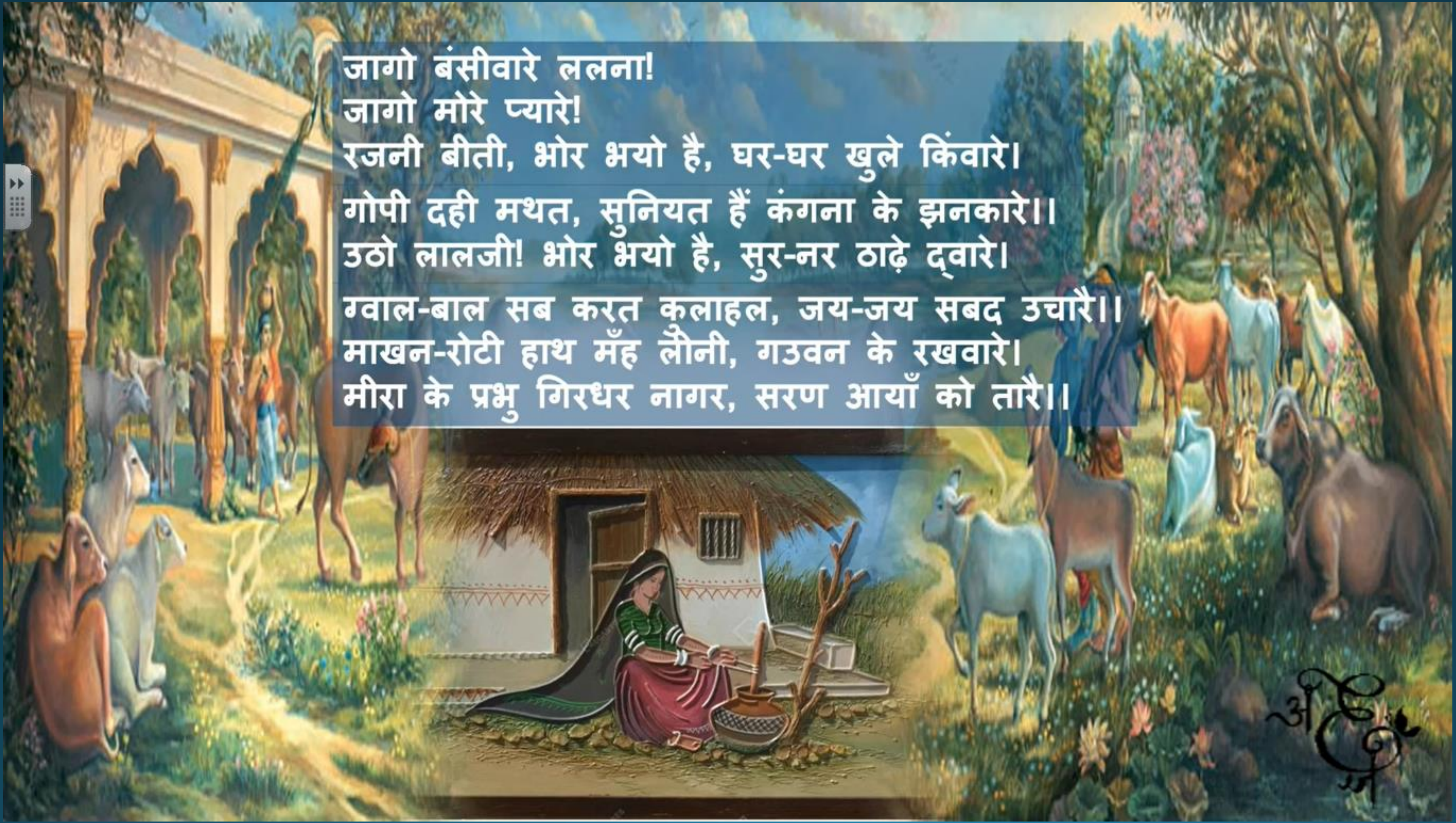

जागो बंसीवारे ललना!
जागो मोरे प्यारे!
रजनी बीती, भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे।।
उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै।।
माखन-रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ को तारै।।

जागो बंसीवारे ललना !
जागो मोरे प्यारे !
रजनी बीती, भोर भयो है, घर-घर खुले किंवारे।
ललना – cute child /son
रजनी – night
भोर – dawn
किंवारे – doors

गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे।।
उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।

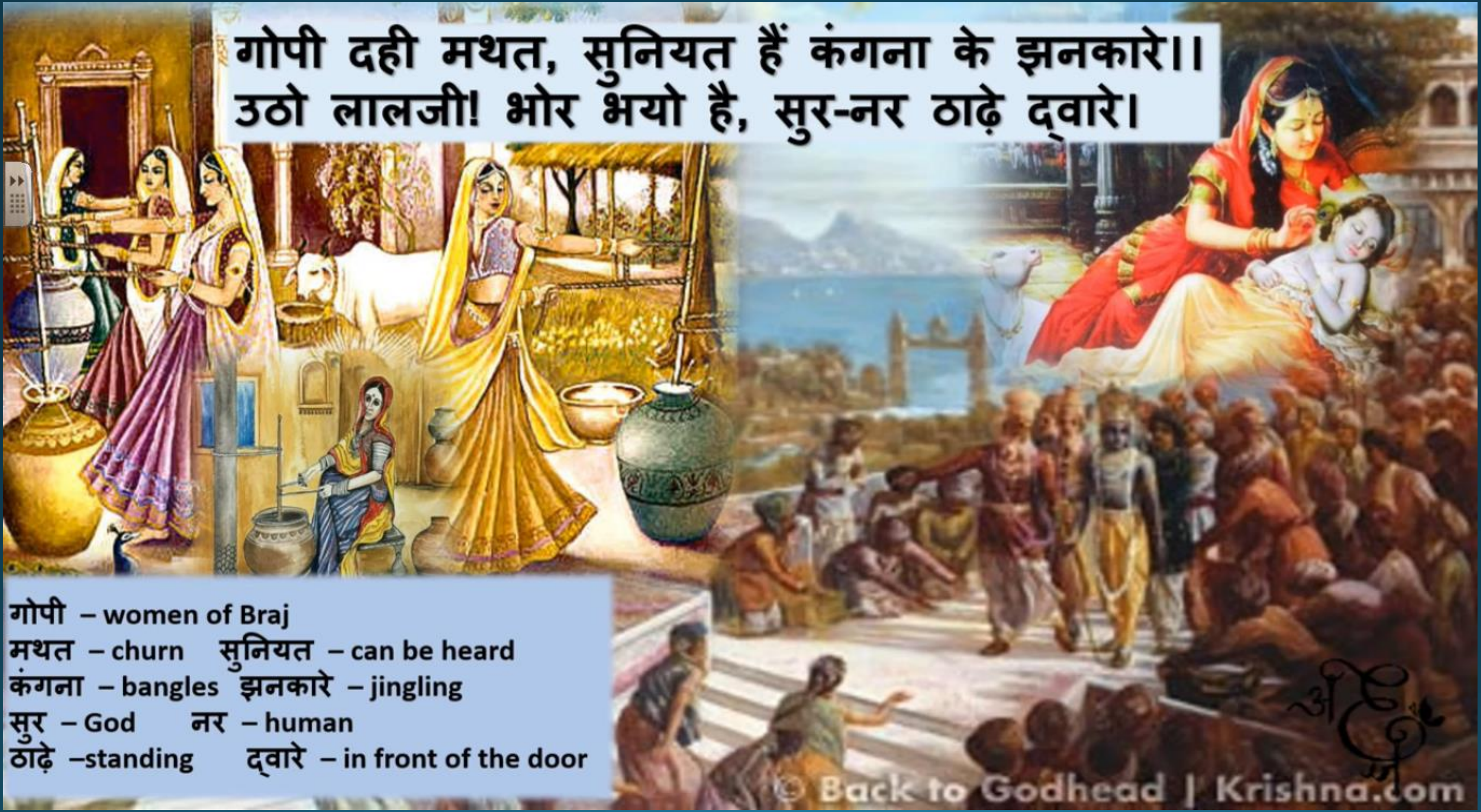

गोपी – women of Braj
मथत – churn सुनियत – can be heard
कंगना – bangles झनकारे – jingling
सुर – God नर – human
ठाढ़े –standing द्वारे – in front of the door

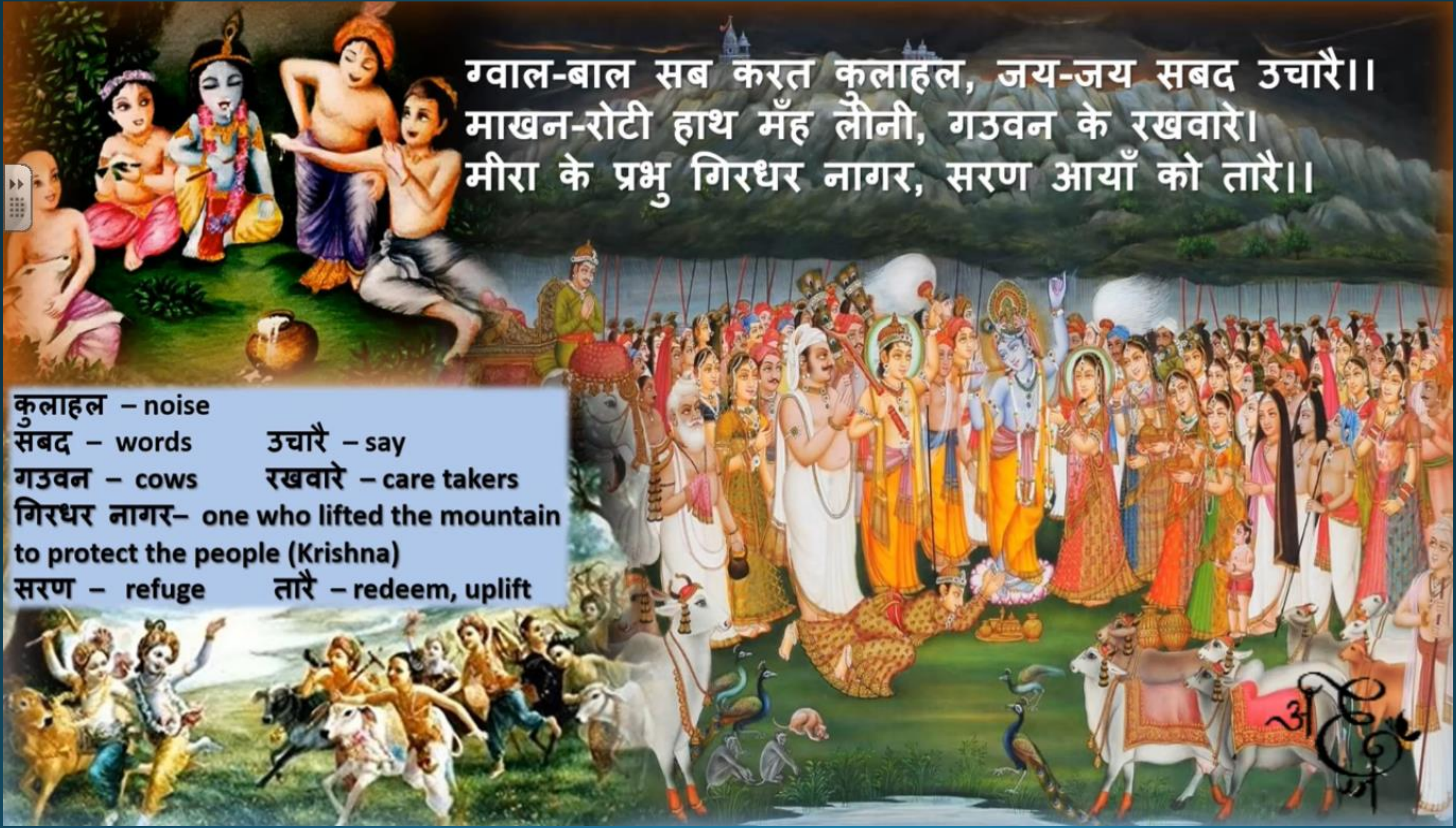
ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै।।
माखन-रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सरण आयाँ को तारै।।
कुलाहल – noise
सबद – words
उचारै – say
गउवन – cows
रखवारे – care takers
गिरधर नागर– one who lifted the mountain to protect the people (Krishna)
सरण – refuge
तारै – redeem, uplift

पहले पद का सारांश

यशोदा माता बालक कृष्ण से कहती हैं कि “उठो मेरे लाल ! रात खत्म हो गई है, सुबह हो गई है और सभी लोगों के घरों के दरवाजे खुल गए हैं। ज़रा देखो, गोपियाँ दही मथकर तुम्हारा मनपसंद मक्खन निकाल रही हैं। उनके कंगन की झंकार यहाँ तक सुनाई दे रही है । हमारे दरवाज़े पर देवता और सभी मनुष्य तुम्हारे दर्शन करने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। तुम्हारे सभी ग्वाल-मित्र हाथ में माखन-रोटी लिए द्वार पर खड़े हैं और तुम्हारी जय-जयकार कर रहे हैं। वो सब गाय चराने जाने के लिए तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। इसलिए उठ जाओ कान्हा!”

पाठ-16 भोर और बरखा page-119

शब्दार्थ

1. बंसीवारे - कृष्ण
2. ललना - प्यारा बालक
3. रजनी - रात्रि ,रात
4. भोर - सुबह
5. भयो - हो गई
6. किंवारे - दरवाज़े
7. मथत - बिलोना (**churning**)
8. सुनियत - सुनाई देना
9. कंगना - कंगन (**bracelet**)
10. झनकारे - आवाज़
11. सुर-नर - देवता-मनुष्य
12. ठाढ़े - खड़े हैं
13. द्वारे - दरवाज़े

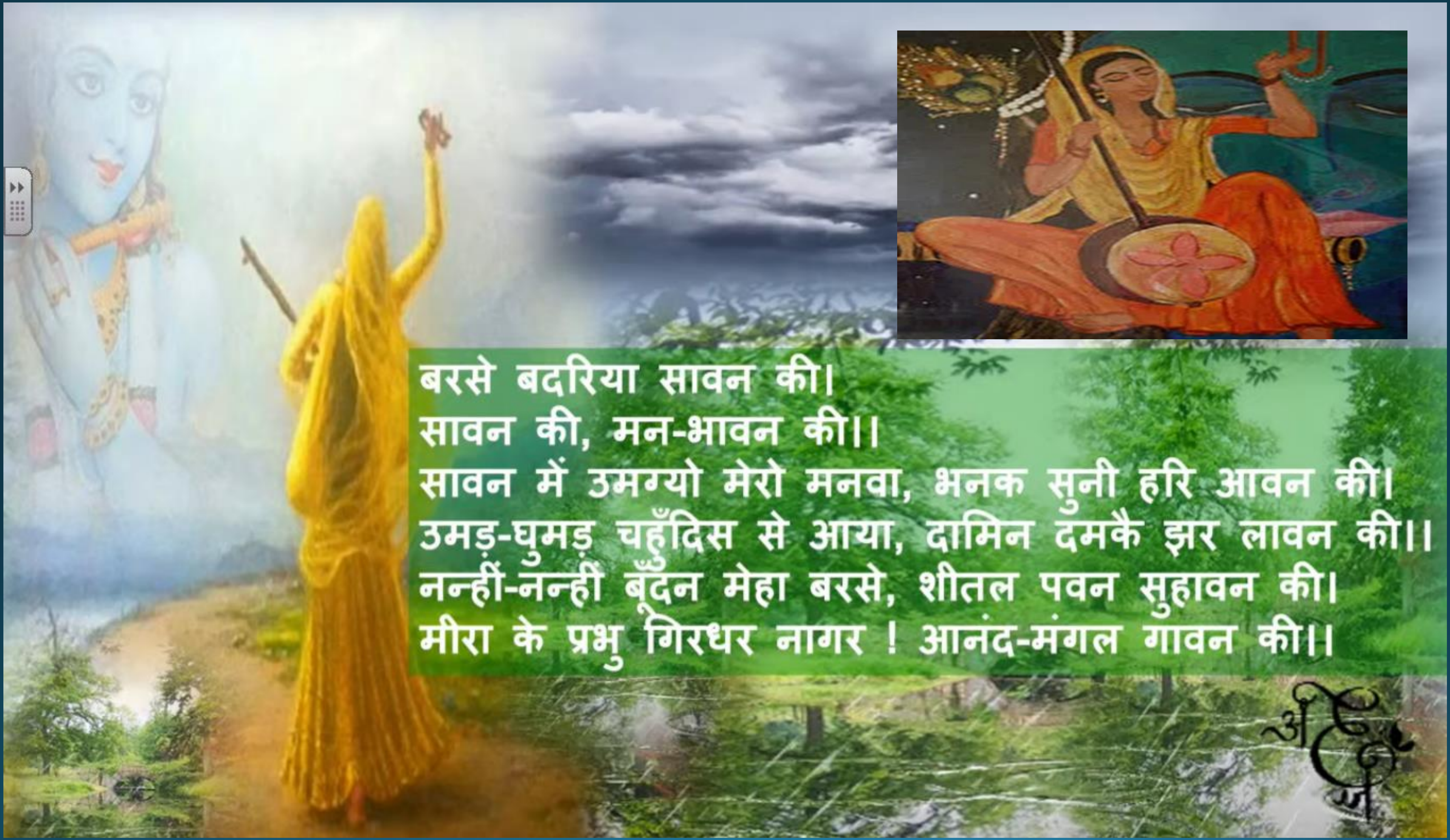

बरसे बदरिया सावन की।
सावन की, मन-भावन की।।
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़-घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर लावन की।।
नन्हीं-नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ! आनंद-मंगल गावन की।।

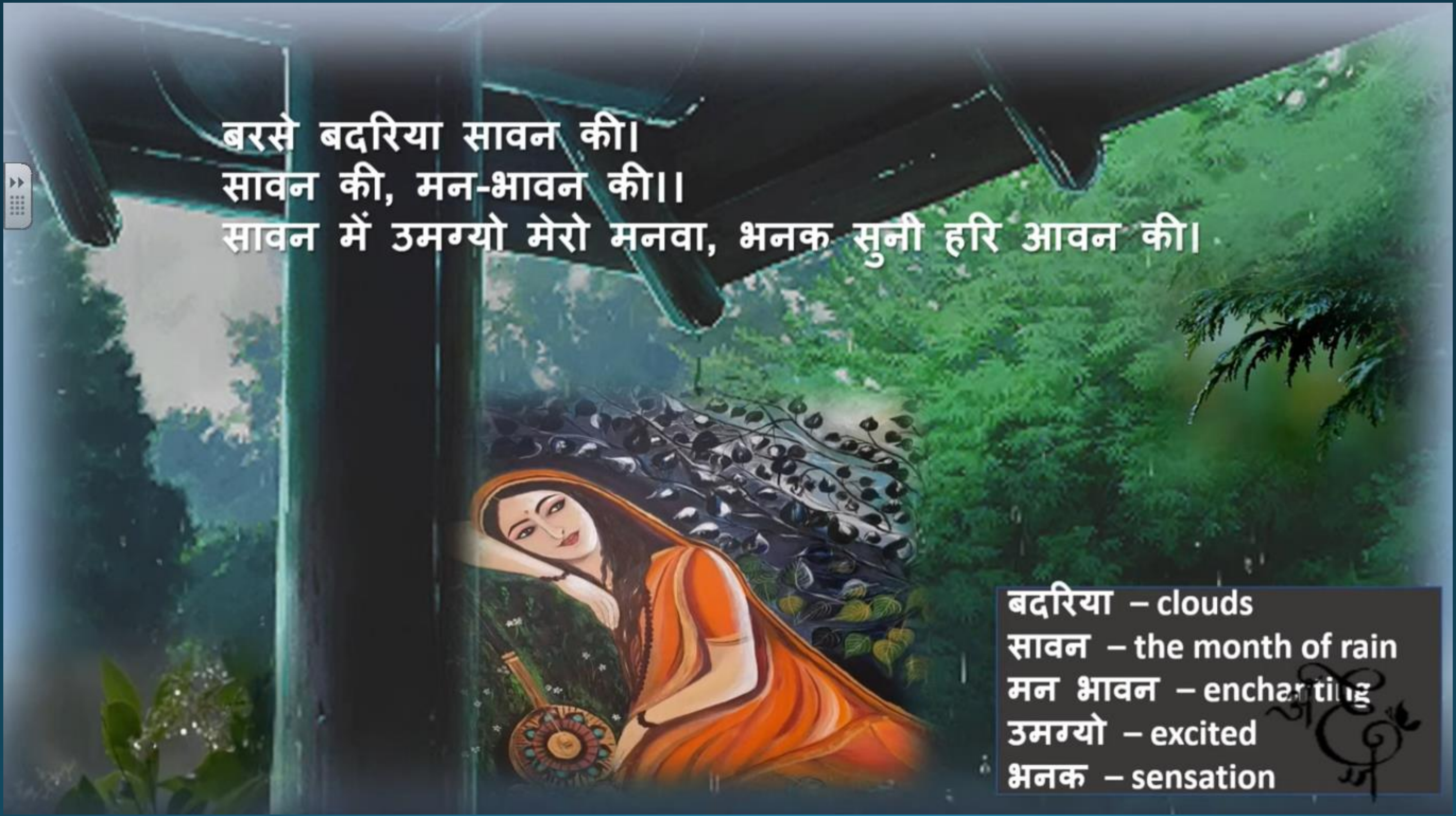
बरसे बदरिया सावन की।
सावन की, मन-भावन की।।
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
बदरिया – clouds
सावन – the month of rain
मन भावन – enchanting
उमग्यो – excited
भनक – sensation

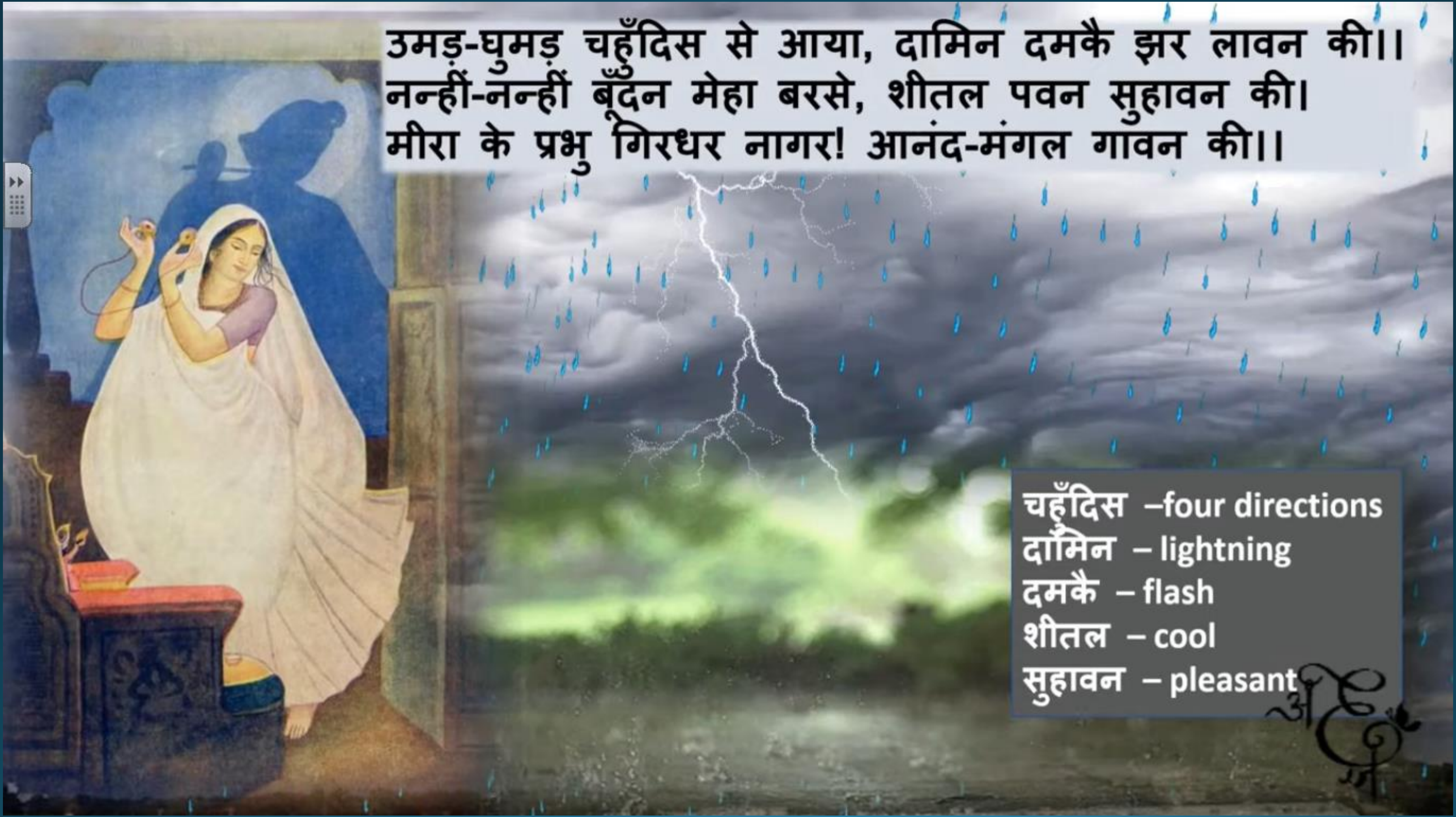
उमड़-घुमड़ चहुँदिस से आया, दामिन दमकै झर लावन की।।
नन्हीं-नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर! आनंद-मंगल गावन की।।
चहुँदिस –four directions
दामिन – lightning
दमकै – flash
शीतल – cool
सुहावन – pleasant

दूसरे पद का सारांश

अपने दूसरे पद में मीराबाई सावन का बड़ा ही मनमोहक चित्रण कर रही हैं। पद में उन्होंने बताया है कि सावन के महीने में बरसात कितनी मनमोहक लग रही है। बादल उमड़-घुमड़ कर आसमान में चारों तरफ फैल जाते हैं, बिजली कड़कती है और बारिश होने लगती है। बादलों से बरसात की नन्ही-नन्ही बूँदें गिर रही हैं और ठंडी हवा सुहानी लग रही है ।ऐसे में मीराबाई को श्रीकृष्ण के आने का आभास होता है।वे कृष्ण के आने की खुशी में सुखद और मंगलमय गीत गाना चाहती हैं ।

पाठ-16 **भोर और बरखा** page-120

शब्दार्थ

1. बरसे - बरसाना
2. बदरिया - बादल
3. सावन - महीने का नाम
4. मन-भावन - मन को अच्छा लगाने वाला
5. उमग्यो - उमंग, प्रसन्नता
6. मेरो - मेरा
7. मनवा - मन, हृदय
8. भनक - संकेत, खबर
9. उमड़-घुमड़ - घूमते-घूमते
10. चहुँदिस - चारों दिशाओं
11. शीतल - ठंडी
12. पवन - हवा, वायु
13. सुनी - सुनकर
14. हरि - श्री कृष्ण
15. आवन - आने
16. दामिन - बिजली
18. दमकै - चमकना
19. झर - वर्षा
20. लावन - लाने वाली
21. बूँदन - बूँदें
22. .मेहा - बादल
23. सुहावन - प्रिय लगने वाला
24. गावन - गीत गाना

दिए गए चत्रों के आधार पर क वता की पंक्तियों का वर्णन-

जागो बंसीवारे ललना! जागो मोरे प्यारे!
रजनी बीती, भोर भयो है, घर-घर खुले कंवारे।
गोपी दही मथत, सुनियत हैं कंगना के झनकारे।।

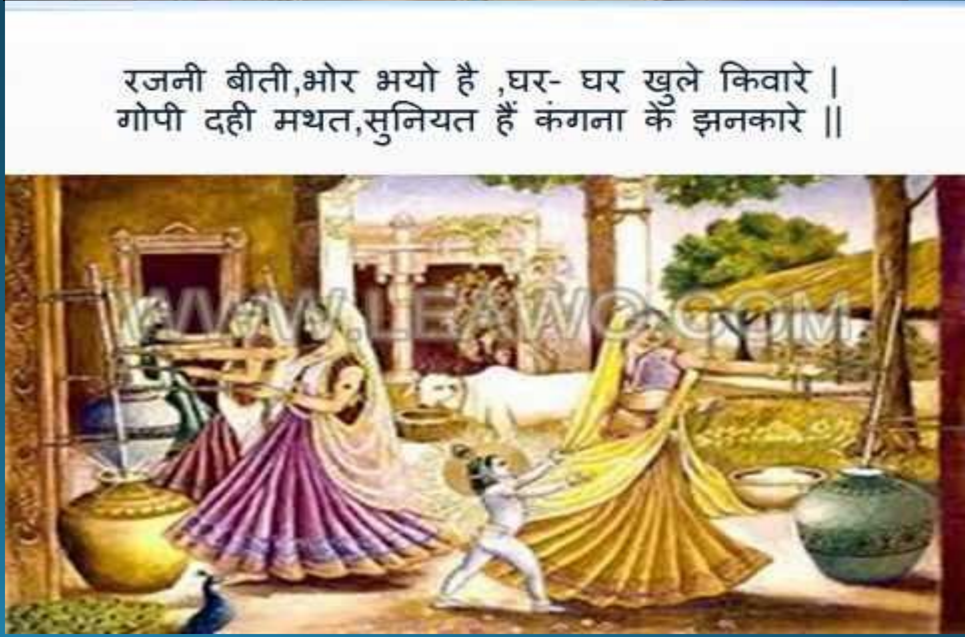

यशोदा जी कहती हैं –
उठो लालजी! भोर भयो है, सुर-नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल-बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारै।।

यशोदा जी कहती हैं –
माखन-रोटी हाथ मँह लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गरधर नागर, सरण आयाँ को तारै।।

दूसरे पद में सावन ऋतु का वर्णन है।

बरसे बदरिया सावन की। सावन की, मन-भावन की।।

दूसरे पद में सावन ऋतु का वर्णन है।

सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़-घुमड़ चहुँदिस से आया, दा मन दमकै झर लावन की।।

नन्हीं-नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गरधर नागर! आनंद-मंगल गावन की।।

दूसरे पद में सावन
ऋतु का वर्णन है।

पुनरावृत्ति

- बालक श्रीकृष्ण को जगाने का प्रयास कौन कर रही है ?
- गोपियाँ क्या कर रही हैं ?
- दरवाज़े पर कौन खड़े हैं ?
- कौन शोर मचा रहे हैं ?
- ग्वाल – बाल के हाथों में क्या है ?
- मीराबाई को किसके आने की भनक सुनाई देती है ?

माँ यशोदा / दही मथ रही हैं / सुर – नर / ग्वाल – बाल / माखन – रोटी / श्रीकृष्ण / मनभावन

HOME WORK
गृहकार्य

H.W सुलेख, चत्र,शब्दार्थ

C.W अनुच्छेद लेखन – जंगल की सैर
या
बरसात का मौसम

https://www.youtube.com/watch?v=jMrkAHTTnn4

धन्यवाद